P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों में नायिका चित्रण

अपर्णा श्रीवास्तव
शोधार्थी,
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट,
(डीम्ड यूनीवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा,उ0.प्र0,
भारत

सारांश

सम्पूर्ण चित्रकला जगत में नायिका चित्रण एक महत्वपूर्ण विषय है तथा इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय चित्रकला में नायिकाओं का वर्णनात्मक चित्रण एक विशिष्ट स्थान रखता है जहाँ नायिकाओं की भूमिका के विविध पक्षों को दर्शाया गया हैं। भारतीय साहित्य में नायिका शब्द की परिकल्पना, संस्कृत साहित्य के विख्यात कवि नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि की देन है। भरतमुनि ने स्त्रियों व पुरूषों के प्रेम प्रसंग के लक्षण को आधार मानकर भावों की रस निष्पत्ति की है जिसमें उनकी मानसिक मनोदशाओं, स्वभाव और भावात्मक अवस्थाऐं एवं स्थितियाँ सम्मिलित है।

नायिका चित्रण परम्परा के इस सन्दर्भ में जम्मू के डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों में नायिकाओं का चित्रण उल्लेखनीय है। यहाँ नायिकाओं को श्रृंगार, करूण, शोक इत्यादि विभिन्न मनोभावों के स्वरूपों में चित्रांकित किया है उदाहरण हेतु प्रतीक्षारत नायिका, तोड़ी रागिनी, शंखिनी नायिका इत्यादि। डोगरा कालीन भित्ति–चित्रों में नायिकाओं के न केवल विभिन्न भावात्मक पक्षों के साथ अपितु चित्रों का कलात्मक पक्ष भी प्रस्तुत किया गया है जो नायिका चित्रण परम्परा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

मुख्य शब्द : जम्मू, डोगरा कालीन, नायिका चित्रण, नायिका भेद, कलात्मकता।

प्रस्तावना

सम्पूर्ण चित्रकला जगत में नायिका चित्रण एक महत्वपूर्ण विषय है तथा इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय चित्रकला में नायिकाओं का वर्णनात्मक चित्रण एक विशिष्ट स्थान रखता है जहाँ नायिकाओं की भूमिका के विविध पक्षों को दर्शाया गया हैं। इस सन्दर्भ में भारतीय चित्रकला में जम्मू के डोगरा राजवंश की भित्ति चित्रकला(19 वीं शताब्दी)[1] में नायिकाओं को विशेष महत्व दिया गया है। भारतीय साहित्य में **नायिका** शब्द की परिकल्पना, संस्कृत साहित्य में विशेषकर **भरतमुनि** की देन है, जो **नाट्यशास्त्र के रचयिता** और भारतीय शास्त्रीय नृत्य और नाटक को अनुशासित करने वाले सिद्धान्तों के प्रतिपालक थे। भरतमुनि ने नायक एवं नायिका के प्रेम प्रसंग को आधार मानकर भावों की रसनिष्पत्ति का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है–जिसमें मानसिक मनोदशाऐं, स्वभाव और भावात्मक अवस्थाऐं और स्थितियाँ शामिल हैं, जिसके अर्न्तगत यहाँ डोगरा कालीन भित्तिचित्रों में श्रृंगार रस, भयानक रस, करूण रस का भावपूर्ण चित्रांकन दृष्टव्य है।[2]

चित्र सं0 – 1, प्रतीक्षारत नायिका, 19वीं शताब्दी उत्तरार्ध, आकार–.80x100 सेमी. लगभग

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भरतमुनि ने नायिका को नाट्यशास्त्रीय एवं श्रृंगारिक साहित्य में उसे नायक की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। अधिकांश भारतीय लघुचित्रों (मिनिएचर्स) और भित्ति चित्रों में नारी का यह रूप मध्यवर्ती स्थान प्राप्त किए हुए है। इनमें से अधिकतर चित्रकारी 17वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल तक की है। ये चित्राकृतियाँ उत्तर भारत मुख्य रूप से मालवा, राजस्थान, हिमालय प्रदेश, गढ़वाल, बसोहली और जम्मू से प्राप्त हुई है।

प्रस्तुत चित्र में नायिका को प्रतीक्षारत नायिका दर्शाया गया है। जम्मू के रामनगर स्थल पर शीशमहल की भित्ति पर निर्मित प्रस्तुत चित्र में नायिका के हाव–भाव एवं अंग भंगिमाओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने प्रेमी की प्रतीक्षा कर रही है। यह चित्र क्षतिग्रस्त स्थिति में है। चित्र सं0 –1[3], नायिका के एक हाथ में फूलों की लता है तथा दूसरे हाथ में प्रतीत होता है कि वह वृक्ष की शाखा को पकड़ कर खड़ी है, जो कि क्षतिग्रस्त है। नायिका के लहँगें तथा चुन्नी की पारदर्शिता प्रदर्शित है जिसके द्वारा पजामी की सुन्दरता झलकती है। नायिका आभूषणों से अलंकृत है तथा डोगरा चित्रकारों ने वेणीसज्जा (चोटी) का सौन्दर्य अत्यन्त कुशलता से चित्रित किया है। रेखाओं की कोमलता से स्त्रीजन्य कोमल भाव प्रदर्शित हो रहा है एवं वस्त्रों की स्थिति तथा सलवटों से रेखाओं की सुन्दरता व गति प्रत्यक्ष है। चित्र में तीन प्रमुख रंगों– लाल, पीला, हरा का संयोजनात्मक सौन्दर्य प्रशंसनीय है। इस चित्र में इन चटक रंगों की तीव्रता का सन्तुलन अद्वितीय है। चित्र में प्रत्येक सूक्ष्म एवं स्थूल वस्तु का अंकन सौन्दर्यपूर्ण है।

प्रस्तुत चित्र में तोड़ी रागिनी[4] का कथानक चित्रित है। यह कथानक मध्य भारतीय चित्रकला की रागमाला श्रृंखला पर आधारित है। रागमाला के अन्तर्गत विभिन्न भारतीय सांगीतिक मनोभाव समाहित है जिन्हें राग कहा जाता है। यह राग मध्य भारत के शास्त्रीय संगीत, कविताओं इत्यादि कला विधाओं का शास्त्रीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। रागमाला चित्रों का निर्माण अधिकांशतः 16वीं–17वीं शताब्दी के आरम्भिक समय के भारतीय चित्र कला स्कूलों में किया गया है, और आज जिसे पहाड़ी रागमाला, राजस्थान या राजपूत रागमाला दक्कन रागमाला और मुगल रागमाला इत्यादि चित्रशैलियों के आधार पर इस चित्र श्रृंखला का नामकरण किया गया है।

चित्र सं0 – 2[5] में, यह नायिका अपने प्रियतम से पृथक हो गई है, प्रेम में अत्यन्त दुःखी, सन्यायिनी एवं तपस्विनी के भाँति संसार को त्यागकर खड़ी है और हिरनों से घिरी हुई अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रही है, ये रागमाला चित्रों का श्रेष्ठ उदाहरण है। इस नायिका के समीप अन्य दो स्त्रियाँ भी वन में खड़ी हुई हैं। पुष्पों से आवृत्त सुन्दर वन में नायिका के हाथ में एक सांगीतिक वाद्ययंत्र सुशोभित है जो अपने प्रेमी की अनुपस्थिति से व्याकुल प्रेमी से मिलन की कामना से अनुरक्त है। यह दृश्य तोड़िनी रागिनी से सम्बन्धित एक सामान्य प्रसंग चित्र है। इस चित्र में नायिका ने वीणा धारण किया हुआ है और हिरनों से घिरी हुई है।

चित्र सं0 – 2,
तोड़ी रागिनी, 19वीं शताब्दी, मध्य पूर्व, आकार–.80ग100 सेमी. लगभग

इस चित्र में सांबा हिरन के शारीरिक आकर्षण को स्त्री आकृति की उपमा दी गई है। चित्र में हिरनों के द्वारा तोड़ी रागिनी संगीत को सुनते हुए चित्रित किया गया है। चित्र के विषय का अत्यन्त गहन ह्रदयस्पर्शी एवं मार्मिकता दृश्यांकन किया गया है। चित्र में ग्रामीण परिवेश का चित्रांकन किया गया है जिसके अन्तर्गत एक आश्रम तथा निकट ही एक स्त्री को सन्यासिनी के वंश में चित्रित किया है। दृश्य में प्रकृति का सौन्दर्यपूर्ण एवं सरल चित्रांकन किया है। चित्र में प्राथमिक रंगों को लोककला की भांति संयोजित कर प्रयुक्त किया गया है। सम्पूर्ण चित्र को तीन भागों– अग्र भूमि, मध्य भूमि तथा पृष्ठभूमि में चित्रांकित किया है। चित्र के अग्र भाग में नहर को नीले–श्याम रंग से दिखाया है व एक नौका को नाविक के द्वारा नहर पार करते हुए दिखाया है जिसमें बैठी यात्रियों की आकृतियाँ अपेक्षाकृत छोटी है। चित्र के मध्यभाग में मुख्य विषय का चित्रांकन है तथा अन्तिम भाग– पृष्ठभूमि में पठार तथा पुष्पों से आच्छादित सुन्दर वृक्षों का चित्रांकन कर डोगरा चित्रकारों ने परिप्रेक्ष्य दर्शाने का प्रयत्न किया है।

भारतीय कला, संस्कृति की दृष्टि से न केवल राष्ट्रीय, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष छवि बनाये हुए है। देश को विरासत में मिली साहित्यिक, पुरातात्विक, लोक संस्कृति एवं कलाओं को अधिक प्रभावों एवं सामान्य जन तक पहुँचाने तथा जीवंत बनाए रखने की स्वतंत्रता ही कला संस्कृति का योगदान है तथा यह सभी भावयुक्त सांस्कृतिक विषयों के चित्र डुग्गर संस्कृति की अमूल्य सम्पत्ति है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्र सं.–3, विरहिणी नायिका, रेखाचित्र सं.–1, आकार–.80x100 सेमी. लगभग, 19वीं शताब्दी मध्य पूर्व

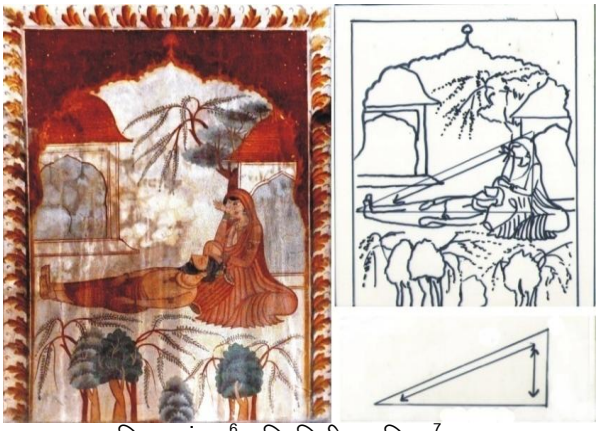

चित्र सं.–3[6], विरहिणी नायिका[7] का यह दृश्य जम्मू के मुरार चक्क गांव में रघुनाथ जी मंदिर के गर्भगृह की भित्ति पर चित्रित है। इस शीर्षक चित्र में विरहिणी नायिका के मनोभावों को भलीभांति स्पष्ट किया गया है, जहाँ नायिका के प्रियतम को मृत अवस्था में तथा नायिका को मस्तक पर हाथ रखकर सौभाग्य(पति) की क्षति पर विलाप की अवस्था में दर्शाया है। डोगरा चित्रकारों ने इस प्रसंग के परिवेश में भी नीरस भाव को प्रकृति के माध्यम से दर्शाने का प्रयत्न कर वृक्षलताओं के चित्रण में बसंत ऋतु का उत्साह नहीं, अपितु पतझड़ की नीरसता को दिखाकर विषय प्रसंग के साथ आनुपातिक सामंजस्य परिलक्षित है। इस चित्रफलक के अनुसार चित्र में नायिका की विरह वेदना को दर्शाने हेतु भूरा रंग मुख्यतः प्रयुक्त है, जो यहाँ विरह वेदना का प्रतीक है। भूरे वर्ण के पश्चात् श्याम (ग्रे) तथा वृक्षलताओं में हल्के हरे रंग का प्रयोग है, जो विषय की परिस्थिति के अनुकूल है।

डोगरा चित्रकारों ने विरह पीड़ा के इस दृश्य को विकर्ण संयोजन (देखिए रेखाचित्र सं.–1, विकर्ण संयोजन दुःखभाव का परिचायक है) के द्वारा दर्शाया है। अतः यहाँ क्षैतिज आयताकार भूमि से विकर्ण भुजाओं की अपेक्षा अनुपात भिन्न है। यह भिन्न अनुपात ही चित्रित विषय के भाव को प्रकट करता है। नायक–नायिकाओं के शारीरिक गठनशीलता की सुकुमारिता अनुपातिक है। इस चित्र में चित्रित नायिका की आंगिक भाव–भंगिमाऐं एवं वस्त्राभूषण का रेखात्मक सौन्दर्य सूक्ष्म है। वियोग श्रृंगार का यह दृश्य करूण रस का श्रेष्ठ उदाहरण है।

हिन्दी साहित्य के महाकवि कक्कोक ने नायिकाओं को उनकी जातीयता के आधार पर विभक्त किया है– 1. पदिमनी, 2. चित्रिणी, 3. शंखिनी, 4. हस्तिनी। यद्यपि भारतीय चित्रकला साहित्य में सर्वाधिक प्रसिद्ध नायिका भेद वर्गीकरण भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में उल्लेखनीय है। किन्तु उक्त भित्ति चित्र हिन्दी साहित्य के महाकवि कक्कोक द्वारा किये गये नायिका भेद वर्गीकरण में से एक शंखिनी नायिका भेद प्रसंग से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत उसकी भाव–भंगिमाऐं–कोपशीला, निर्लज्ज, निशंक, अधीरा प्रदर्शित होती है। शंखिनी नायिका के लक्षण के अन्तर्गत ये नायिका कृष या स्थूल शरीर वाली, पिशुन एवं मलिन प्रकृति, खर सदृश वाणी वाली नायिका सम्मिलित है। शील भाव की दृष्टि से शंखिनी नायिका का तृतीय स्थान पर है। केशव (महाकवि) के अनुसार शंखिनी नायिका कोपशीला तथा कपटी होती है। उसका शरीर श्वेद युक्त तथा सलोम होता है। लाल रंग के कपड़े पहनने में उसकी रूचि होती है। वह सुरत (चेहरा) में अधिक अनुराम रखती है–

कोपसील कोबिद कपट,
सजल सलोम शरीर।
अरून–बसन नखदान रूचि,
निलज निसंक अधीर।।[8]

शंखिनी नायिका से सम्बन्धित प्रस्तुत काव्य में इस नायिका के लक्षणों का वर्णन किया गया है। **''रसलीन''** महाकवि ने शंखिनी नायिका का स्पष्ट एवं संक्षिप्त वर्णन किया है। अर्थात् यह नायिका कोपशील, नखक्षत में रूचि रखने वाली होती है।

चित्र सं.–4,
शंखिनी नायिका, आकार– -80x100 सेमी. लगभग, 19 वीं शताब्दी

मध्य पूर्व

चित्र सं.–4[9] में भित्ति चित्र शंखिनी नायिका[10] प्रसंग से सम्बन्धित है तथा इस विषय का संक्षिप्त सार उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है। दृश्य में चित्रित नायिका सामान्य नायिकाओं से अधिक स्थूल, स्वभाव से मलिन प्रकृति तथा खर (करकश) वाणी वाली नायिका प्रतीत होती है। यहाँ प्रदर्शित नायिका की आंगिक व मुख मण्डल की भाव–भंगिमाऐं नेत्र तीखे, नासिका मोटी व आगे निकली हुई, गोल चिबुक वाली, हाथ में पुष्प लिये नायक से मिलन हेतु अधीर एवं व्याकुल प्रतीत हो रही है। इस चित्र में नायिका के समीप बत्तखों का चित्रण प्रदर्शित है। दृश्य की अग्रभूमि में नायिका का पक्षियों तथा प्रकृति (वृक्ष) के साथ चित्रण दर्शाया गया है तथा परिप्रेक्ष्य प्रदर्शित करने हेतु यहाँ पृष्ठभूमि में भवन, हरिण तथा वृक्ष का चित्रण किया है। चित्र में नायिका को लाल रंग के वस्त्र पहने हुए प्रदर्शित किया है जिससे शंखिनी नायिका के लक्षण की पुष्टि होती है। इस दृश्य में मोटी रेखाओं के द्वारा आकृतियों की रचना की गई है। चित्रगत संयोजन

सरल है जिसमें लाल, पीला, हरा, भूरा व किंचित स्थानों पर काले रंग का प्रयोग किया है। डोगरा चित्रकारों ने इन चटक रंगों का प्रयोग छायाप्रकाश के साथ सौम्य प्रभाव प्रदर्शित किया है। सपाट पृष्ठभूमि में चित्रित यह चित्र की प्रमुखता पर केन्द्रित है। इस भित्ति चित्र के माध्यम से डोगरा चित्रकारों ने अपनी सृजनात्मकता दर्शाने का सफल प्रयत्न किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

नायिका चित्रण, भारतीय चित्रकला जगत की चित्रांकन हेतु प्रिय विषयों में से एक है। भारत वर्ष की प्रत्येक क्षेत्रीय शैली में नायिका चित्रण के विभिन्न स्वरूपों के दर्शन होते हैं। इनमें जम्मू की डोगरा कालीन भित्तिचित्रों का सन्दर्भ उल्लेखनीय है। इस शोध पत्र में भरतमुनी के नायिका भेद एवं नायिका चित्रण के महत्व का वर्णन करते हुए इस चित्रण शैली में व्यक्त भावात्मक व कलात्मक पक्ष का विश्लेषण किया गया हैं। इन भित्तिचित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि डोगरा कालीन नायिका चित्रण परम्परा में कला तत्वों का समन्वय अद्भुत है। मै. आशा करती हूँ कि भविष्य के शोधार्थियों हेतु यह अध्ययन ज्ञानवर्धक व मूल्यवान सिद्ध हो तथा कला जगत के समस्त अनुसन्धानकर्ता लाभान्वित हो सके।

निष्कर्ष

अतः अन्त में उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि जम्मू राज्य की डोगरा कालीन भित्ति चित्रण संस्कृति में नायिकाओं के विभिन्न भेद का वर्णन करते हुए इस शोध पत्र में यह भी स्पष्ट किया गया है कि डोगरा कालीन नायिका चित्रण के विषय के भावात्मक पक्ष को अत्यन्त सहजता के साथ कलात्मक तत्वों के साथ चित्रांकित किया है। इन भित्तिचित्रों में शारीरिक सौष्ठव की अपेक्षा आन्तरिक भावों की अद्भुत अभिव्यक्ति की गई है। नायिका चित्रण के दृश्यों में, मितव्ययिता, आध्यात्मिकता और रस का मधुर प्रवाह दर्शकों की अनुभूति को सन्तुष्ट करने में सहायक है। डोगरा कालीन इन भित्तिचित्रों में मानव, पशु–पक्षी एवं जड़ पदार्थों को भी स्थान दिया गया है, उनके शारीरिक सौन्दर्य को मनः स्थितियों की प्रतिच्छाया स्वरूप अभिव्यक्त हैं।

अंत टिप्पणी

1. *Sath, Mira Dogra Wall Paintings in Jammu & Kashmir, page n.-12.*
2. *अशोक, कला सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र, पृ.सं.–182*
3. *पुरातत्व संग्रहालय, गांधीनगर सर्किल, जम्मू से प्राप्त, दिनाकः 2 जून, 2016।*
4. *दास, केशव, रसिकप्रिया, 3/8–9.*
5. *स्वयं सर्वेक्षणः मुरार चक्क मंदिरः–8 जून, 2016।*
6. *स्वयं फोटोग्राफी–8 जून, 2016।*
7. *वही.*
8. *वही.*
9. *रसलीनः रस प्रबोध, भारत जीवन प्रेस, पृ.सं.–52*
10. *स्वयं सर्वेक्षण एवं फोटोग्राफी, दिनांकः 8 जून, 2016।*